अक्टूबर 2016 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

इस मन को जरा खाली बनायें
फिर चाहे रोज दिवाली मनायें।

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :

साध्वी कनकलता

साध्वी वसुमती

परामर्शक :

श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :

अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :

श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक

अरूण तिवारी

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,

नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26345550, 26821348

Website : www.rooprekha.com

E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

सही संयोजन से अक्षर बनते मंत्र और इससे आकार लेती मनुष्यता

ऐसे ही मन को अनाम तक ले जाने के लिए पहले नाम का ही आलंबन लेना पड़ता है। प्रारंभ में और-और सभी नामों से मन को हटा कर उसे एक नाम के साथ जोड़ें, फिर उस नाम से भी मन को हटा कर अनाम में छलांग लगाएं। नाम-सुमिरन वह खिड़की है जिसके द्वारा अनाम के आकाश में छलांग लगाई जा सकती है। 06

जड़ को जलाकर पत्तों की सुरक्षा

मध्यस्थ व्यक्ति का मन-रूप बछड़ा युक्ति रूपी गाय के पीछे-पीछे चलता है और आग्रही व्यक्ति का मन-रूप बन्दर युक्ति रूपी गाय की पूंछ पकड़कर अपनी ओर खींचता है। लेकिन हित गाय के पीछे चलने में है या उसे अपनी ओर खींचने में, इसे हम सब जानते हैं। 09

गुरुकुलः लोकस्थापित और लोक समर्पित शिक्षा व्यवस्था

हम अपनी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से कुछ सीख कर अपनी नई शिक्षा नीतियों को दिशा दे सकते हैं। कोई भी व्यवस्था एक क्रमिक विकास का परिणाम होती है, पूरी व्यवस्था को साबुत हटाकर नई व्यवस्था नहीं लाई जा सकती लेकिन हम दोनों व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके तत्वमसि, यानि काम की बातें ग्रहण जरूर कर सकते हैं 13

ब्रह्मज्ञानी रैक्व की कथा

उस रात राजा को नींद नहीं आई। उसके मस्तिष्क में सिर्फ रैक्व का नाम ही गूंजता रहा। वह सोचता रहा, 'प्रातः उठकर सबसे पहले रैक्व को खोज निकालने का काम ही करूंगा। अपने सेवकों को भेजकर उसे राजसभा में बुलवाऊंगा। फिर देखूंगा कि कैसा है वह व्यक्ति रैक्व?' 20

संत-वाणी

ज्ञान सरीखा गुरू न मिलिया, चित्त सरीखा चेला।
मन सरीखा मेलू न मिलिया, गोरख फिरै अकेला।।

–योगी गोरखनाथ

बोध-कथा

बुद्धिमत्ता की सराहना

एक दिन एक व्यक्ति ने भोजन चुराया और वह पकड़ा गया। राजा ने उसे इस गलती के लिए फांसी पर लटकाने का आदेश दे दिया। फांसी पर लटकने से पहले जब उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उस व्यक्ति ने कहा कि 'महाराज, मैं एक ऐसा सेब का बीज बो सकता हूं जो एक ही दिन में विशाल पेड़ बन जाएगा और फल देने लगेगा। यह कला मुझे मेरे पिता ने सिखाई थी, पर अब मेरे मरने के बाद यह कला भी समाप्त हो जाएगी।' राजा हैरान हुआ और उसने उसे वह सेब का पेड़ उगाने की इजाजत दे दी। उस व्यक्ति ने एक गड्ढा खोदा और का, 'महाराज, पेड वही व्यक्ति उगा सकता है जिसने आज तक कभी कोई चोरी न की हो, पर मैं तो अब चोर साबित हो चुका हूं। जाहिर है, अब मैं इसे नहीं उगा सकता। इसे वही व्यक्ति उगा सकता है, जिसने कभी वो चीज न ली हो जो उसकी अपनी न हो।' यह सुनकर राजा ने अपने मंत्री को वह पेड़ उगाने का आदेश दिया। मंत्री हिचकिचाते हुए बोला, 'महाराज, जब मैं युवक था तब मैंने किसी की एक चीज चुराई थी, इसलिए मैं भी इसे नहीं उगा सकता।' राजा ने प्रधानमंत्री को आदेश दिया तो उसने भी क्षमा मांगते हुए कहा– 'महाराज, मैंने भी एक बार अपने पिता के पैसे चुराए थे। इसलिए मैं भी इसे नहीं उगा सकता।' अब स्वयं राजा की बारी आई, लेकिन उसे भी याद आ गया कि बचपन में उसने भी अपने पिता की एक कीमती चीज चुराई थी। अंत में चोर ने उन सभी से कहा, आप सभी श्रेष्ठ और समर्थ हैं, आपके पास सब कुछ है, फिर भी आप यह पेड़ नहीं उगा सकते। लेकिन मैं, जिसने खुद को जिंदा रखने के लिए थोड़ा-सा भोजन चुरा लिया, उसे आप प्राणदंड दे रहे है।' राज ने उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता की सराहना की और उसे क्षमा कर दिया।

बिखरती गुरू-शिष्य परंपरा

भारत के शिक्षक जिसके लिए प्रसिद्ध थे, उसके विपरीत अब भारत में शिक्षक और शिक्षकत्व में वह सामर्थ्य नहीं रहा कि वे प्रलय अथवा सर्जन को अपनी गोद में पाल सकें। इसका कारण है गुरू और शिष्य के बीच संहिता का टूट जाना। अब शिक्षकों को खुद पर और अपने छात्रों पर भरोसा नहीं है। जो संहिताएं टूटी वह शिक्षकों ने ही बनाई थीं। जो प्रतिमान, जो आदर्श टूटे हैं वे शिक्षकों ने ही गढ़े थे, जब इनपर वे स्वयं भरोसा नहीं रख पाए तो कोई और भला क्यों रखेगा। अपवादों की चर्चा यहां वाजिब नहीं है।जैसा कि इस अंक के एक अन्य लेख में भी उल्लेख है, जहां आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय है, उसी के पार्श्व में कभी भरद्वाज मुनि का आश्रम हुआ करता था। इस आश्रम में दूर-दूर से लोग शिक्षा पाने के लिए आते थे, आश्रम में दस हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे, साथ-साथ रहते थे और उनके संरक्षक के रूप में मात्र भरद्वाज मुनि थे। भला किसी का दुस्साहस कि अपने गुरू की अनुमति के बिना कोई पत्ता भी खडखड़ा जाए। भरद्वाज ने स्वयं को इस संस्था का कुलपति कहा है। प्राचीनकाल में ऐसे ही धौम्य, च्यवन, द्रोणाचार्य, संदीपणि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, गौतम, भरद्वाज, शीलभद्र जैसे कुलपति थे। बहुत प्राचीन में न जाकर अभी हाल के दशकों में भी देखें तो अनेक ऐसे शिक्षक हुए जिन्होने इस परंपरा को जीवंत रखा। महादेवी वर्मा हर साल गांव से एक लड़की को अपने पास ले आती थीं और उसे पढ़ाती थीं। सच्चा शिक्षकत्व यही था। शिक्षक का लगाव वित्त से नहीं वृत्ति से था और इसीलिए उसे गोविंद ने भी खुद से बड़ा कह दिया था। ऐसा नहीं कि अब ऐसे शिक्षक है ही नहीं लेकिन सवाल उठता है कितने? सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रत्येक मोर्चे पर विश्व से संघर्ष कर रहे युवा देश को मार्ग शिक्षकों के अलावा और कौन दिखाएगा, उनके बुझते दीये की बत्ती को शिक्षकों के सिवा और कौन उकसाएगा? भारत की डूबती आध्यात्मिक चेतना भी तो शिक्षकों के ही सहारे है, और यदि शिक्षक अपने प्रतिमान और शिक्षकत्व से डिगा रहा, भारत की पहचान रही गुरू-शिष्य परंपरा समाप्त हो जाएगी। इस परंपरा को बनाए रखने की जिम्मेदारी शिक्षक की है। भारत की चेतना को जगाए रखने के लिए इसके अलावा और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। बदलते समय ने भले ही विद्या, गुरू और शिष्य के स्थान पर शिक्षा, शिक्षक और छात्र जैसे शब्द का प्रयोग करना शुरू कर दिया हो लेकिन संहिता की आवश्यकता का विकल्प समय के पास नहीं है। हर स्थिति में गुरू-शिष्य परंपरा प्रवाहित होती रहनी चाहिए।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

भीतरी आनंद तक पहुंचने के बाद बाहरी सौंदर्य फीका लगता है

धर्म के बारे में लोगों ने अपनी-अपनी धरणा बना ली है और वे उसे उसी रास्ते पर खुद के साथ-साथ दूसरों को भी ले जाने की कोशिश करते हैं। बड़ी-बड़ी बातों का आभामंडल तैयार कर उपदेशात्मक बना देते हैं जबकि हमारे शास्त्र कहते हैं कि धर्म धारण करने के लिए होता है। लेकिन मुश्किल है कि इसे कोई धारण करने के लिए तैयार नहीं है। इसे आम तौर पर उपदेशों, तीर्थस्थलों, जप-तप ओर सत्संग तक सीमित कर दिया गया है। इस घेरे से ने तो कोई खुद निकलना चाहता है और न औरों को निकालना चाहता है।

धर्म का अर्थ ही है कि हम अपने अवगुणों और दूसरों के गुणों को देखें। लेकिन आज लोग औरों की विशेषताओं को नहीं, कमजोरियों को देखते हैं। अगर हम बुराइयों को देखना ही चाहते हैं तो अपने अंदर झांके। अवगुण और कमजोरियां देखना हो तो अपनी देखें। तब हम पाएंगे कि औरों में गुणों और योग्यताओं की कमी नहीं है। धर्म हमें वह आंख उपलब्ध कराता है, लेकिन इसे पाने के लिए साधना की जरूरत होती है। शास्त्र इसके लिए जप-तप और सत्संग पर बल तो देता है लेकिन यह भी जोड़ता है कि इसके बावजूद अगर हमारी दृष्टि बहिर्मुखी ही है, औरों की बुराइयों और कमजोरियों पर ही लगी हुई है तो समझ लें, अंतर्यात्रा शुरू ही नहीं हुई है। यह सिर्फ केवल सांसारिक जीवन की बात नहीं है, धार्मिक जीवन जीने वाले लोग भी अंतर्यात्रा से दूर रह जाते हैं। यही कारण है कि धर्म-स्थानों में जाकर भी आदमी बाहर-बाहर ही रह जाता है। संत-दर्शन और तीर्थ-दर्शन के लिए हर वर्ष लाखों लोग सामूहिक यात्राएं करते हैं। कई बार मैंने उनसे पूछा है कि कैसी रही यात्रा? इसका जवाब चौंका देता है। वे अच्छी व्यवस्था, स्वादिष्ट खान-पान, आव-भगत, विशाल पंडाल, रंग-बिरंगे लाइट्स, ऊंचे आसन, विदेशी मार्बल की मूर्तियों की सराहना में लग जाते हैं। इसलिए कि नजर

अभी बाहर ही लगी हुई है, भीतर मुड़ नहीं पाई है।

स्वामी आनंदघन गिरनार पर्वत की गुफाओं में विराजमान थे। एक दिन उनके दर्शन के लिए कुछ भक्त-गण पहुंचे। खुशनुमा मौसम था। चारों ओर हरे-भरे पेड़, ठंडी हवाएं, आसमान पर दौड़ती हुई घटाएं ओर जंगल का शांत-एकांत वातावरण। भक्तों ने स्वामीजी से निवेदन किया कि जरा बाहर आकर देखें, कितना अच्छा मौसम है। स्वामीजी ने उत्तर दिया, जरा भीतर झांक कर तो देखें कि कितना सुहावना मौसम है। उनके इस उत्तर में धर्म-साधना का अर्थ छिपा हुआ था। यानी बाहर के मौसम का आनंद लूटने वाली आंखों को भीतरी सौंदर्य के आनंद तक पहुंचने का अभ्यास करना चाहिए। जिसने भीतर का रस चख लिया, उसे बाहरी सौंदर्य का सुख स्वयं ही फीका लगने लगता है।

मन की चंचलता पर काबू पा लें तो हमसे बड़ा सुखी और कोई नहीं

दुनिया का रंग-ढंग देखकर एक संन्यासी के मन में विशाल आश्रम बनाने का जूनून सवार हो गया। आर्किटेक्ट को बुला कर उनका नक्शा तैयार कराया और इस बात की खास तौर पर हिदायत दी कि पूरा आश्रम सुख-सुविधा से संपन्न होना चाहिए। उसकी भव्यता का कोई मुकाबला नहीं कर सके और देश-विदेश में फैले उनके अनुयायियों को आश्रम आने पर किसी कठिनाई का अनुभव भी नहीं हो।

वह उसके लिए रात-दिन परिश्रम करने लगे। गांव-गांव, शहर-शहर घूम कर धन इकट्ठा करने लगे। समय के साथ उनकी लालसा भी बढ़ने लगी। उनकी साधना पर धन हावी हो गया। एक दिन सांझ ढले उनकी मुलाकात अपने ही एक शिष्य से हो गई। शिष्य ने आग्रह करके उन्हें अपने घर रोक लिया। गुरु ने बात-बात में खुशी-खुशी अपनी योजना बता दी।

शिष्य ने गुरू का मन-प्राण से आवभगत किया। भोजन कराने के बाद उनके सोने के लिए खाट पर अपनी एकमात्र दरी बिछा दी और खुद खुरदुरी जमीन पर सो गया। उसके चेहरे पर सुकून था। लेकिन संन्यासी को दरी पर नींद नहीं आ रही थी, मोटे गद्दे पर सोने की आदत जो हो गई थी। वह रात भर सो नहीं पाए। सुबह संन्यासी ने शिष्य से पूछा कि कठोर जमीन पर चैन से कैसे सो लेते हो? उसने जवाब दिया, 'आपने ही तो कहा था कि सत्कर्म और संतोष के विचार को अपने मन में जिंदा रखो, जीवन में न तो कभी दुःख होगा और न साधना से डिगोगे? यह सुनकर संन्यासी जाने को खड़े हुए तो शिष्य ने अपना धर्म निभाते हुए पूछा, 'क्या मैं भी आपके साथ आश्रम के लिए धन एकत्र करने चल सकता हूं?' तब संन्यासी ने उत्तर दिया, 'अब उसकी जरूरत नहीं। तुमने मुझे वह ज्ञान दिया जो मैं भूल बैठा

था। तुमने सिखा दिया कि मन का सच्चा सुख कहां है। अब किसी आश्रम की इच्छा नहीं है।'

वस्तुतः मन के अंदर हर तरह के भाव होते हैं, वह संतोषी भी बनाता है और भटकने का इंतजाम भी करा देता है। अगर हम मन की चंचलता पर काबू पा लें तो हमसे बड़ा सुखी प्राणी और कोई नहीं है। चंचलता हमारे मन को छोटा करती है और यही हमारे सारे दुखों की वजह है। हम चाहते हैं सुख, मिलता है दुःख। मन छोटा होगा तो सुख भी छोटा होगा। मन बड़ा होगा तो सुख भी उतना ही बड़ा होगा।

हमारे ऋषि मुनियों ने इस मन को विराट बनाने के अनेक महत्वपूर्ण सूत्र दिए हैं। महावीर ने कहा है, परस्पर उपकार, प्रेमपूर्ण सहयोग ही जीवों का लक्षण है। यही हमें संतोष-धन देता है।

बुद्ध ने कहा है, बेशर्त जहां कहीं भी संतोष मिले, उसे जिओ। इसी को अनेक विचारकों ने अपने-अपने अनुभवों से कहा है कि समृद्ध वह है जो संतुष्ट है।

<u>सही संयोजन से अक्षर बनते मंत्र और इससे आकार लेती मनुष्यता</u>

हमारा मन मननशील है। वह निरंतर चिंतन-मनन करता ही रहता है। इस मनन से ही मन का अस्तित्व है। सारा चिंतन-मनन शब्दात्मक होता है। हम शब्द के अभाव में चिंतन नहीं कर सकते। दोनों के बीच अभिन्न संबंध है। चिंतन विषयात्मक होता है। इस प्रकार मन और विषय के बीच शब्द के माध्यम से एक संबंध बन जाता है। मन को निर्विषय बनाने के लिए जरूरी है कि वह शब्द-जगत से ऊपर उठे।

इस नाम-रूपमय जगत से ऊपर उठने के लिए प्रारंभ में हमें नाम और रूप का ही सहारा लेना होगा। हीरा केवल हीरे से ही काटा जा सकता है। विष का औषध विष ही होता है, वहां अमृत काम नहीं करता। ऐसा भी कहा जा सकता है कि वहां विष ही अमृत बन जाता है।

ऐसे ही मन को अनाम तक ले जाने के लिए पहले नाम का ही आलंबन लेना पड़ता है। प्रारंभ में और-और सभी नामों से मन को हटा कर उसे एक नाम के साथ जोड़ें, फिर उस नाम से भी मन को हटा कर अनाम में छलांग लगाएं। नाम-सुमिरन वह खिड़की है जिसके द्वारा अनाम के आकाश में छलांग लगाई जा सकती है।

नाम शब्दात्मक होता है, और शब्द अक्षरात्मक। अक्षर का कभी क्षरण नहीं होता। इसका संबंध ध्वनि से होता है। ध्वनि का प्रभाव हमारे तन, मन और चेतन तक जाता है। अंतरजगत पर ध्वनि का प्रभाव और गहरा होता है। अक्षर ध्वनि पर सवार होकर ही अपनी यात्रा तय करता है। नाम और मंत्र का कार्य-क्षेत्र प्रमुखतः ध्वनि-जगत ही है। वहां तक पहुंचने का माध्यम है अक्षर। परंपरा से ही माना जाता है कि ऐसा कोई अक्षर नहीं जो अपने में मन्त्र न हो। ऐसी कोई जड़ी-बूंटी नहीं जो

अपने में औषध न हो और ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो अपने में योग्य न हो। महत्वपूर्ण है इनकी उचित और सही संयोजना।

मंत्र में अक्षरों की सही संयोजना अपने उद्देश्य के अनुसार होती है। दवाओं में भी इसी मात्रा का महत्व है। अच्छे मनुष्य का आकलन करें तो वहां भी गुणों की मात्रा का पता चल जाएगा। अच्छे गीत या कहानी के भाव शब्दों के सही संयोजन से ही असरदार बनते हैं। कवि सम्मेलनों की सफलता में कवियों से ज्यादा संयोजक की जिम्मेदारी अहम रहती है। टीवी की बहस हो या कोई शो, उसकी कामयाबी एंकर (संयोजक) की भूमिका पर निर्भर रहती है। आखिर क्या वजह है कि किसी मंदिर या किसी महापुरुष की मूर्ति के सामने जब खड़े होते हैं तो हमारा मन वहां स्थिर हो जाता है। वस्तुतः वहां एक ध्वनि का अहसास होता है और हम खो जाते हैं।

यह ध्वनि शब्द, अक्षर और मंत्र के मेल से बनी होती है। हम अगर इस संयोजन को समझ पाएं तो जीवन को सार्थक बनाना आसान हो जाएगा।

कविता

गुरुदेव के चरणों में

सतगुरु मिला तो सब मिलै, ना तो मिला ना कोय।
माता-पिता सुत बान्धवा, यह तो घर-घर होय।।
आंसू पोछ कर मेरे, गुरु ने हंसाया है मुझे
मेरी हर गलती पर भी, गुरुवर ने सीने से लगाया है मुझे
विश्वास क्यों न हो मुझे अपने गुरुवर पर,
आप ने हर हाल में जीना सिखाया है मुझे
यह गुरु का दर है यहां मनमानी नहीं होती,
यह बात भी पक्की है कि कोई परेशानी नहीं होती
कुछ तो बात होगी मेरे गुरूदेव में
यूहीं दुनिया इनकी दीवानी नहीं होती।

श्रीमती शकुंतला राजलीवाल
(महासचिव - राष्ट्रीय मेयर एसोसियेशन)

जड़ को जलाकर पत्तों की सुरक्षा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

बड़ी अजीब-सी बात लगती है कि जड़ को जलाकर कोई व्यक्ति पत्तों की सुरक्षा में उलझा रहे, लेकिन ऐसा तो हम सब कर रहे हैं। और वे अधिक व्यग्रता से कर रहे हैं, जो अधिक कुशल, अधिक चिन्तन-परायण और अधिक दायित्वशील हैं। जब वे ही ऐसा करते हैं तब साधारणजन उनका अनुगमन करे तो कौन-सा आश्चर्य? लेकिन लेकिन जानते हो, ऐसा करना हमारी बुद्धि का उपहास ही नहीं, स्पष्ट अपमान भी है। जब कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा करता है तो हम उसे नासमझ कहकर अवहेलना करते हैं और स्वयं की भूल को समझते तक नहीं।

थोड़ी-सी तटस्थता से सोचते हैं तो लगता है, शायद बच्चे भी ऐसी भूल नहीं करते, जैसी हम धर्म और विद्वता का दावा रखने वाले करते हैं। राजनीति में भी शायद इतना उग्र अभिनिवेश छिटपुट बातों को लेकर नहीं होता, जितना कि धर्म-सम्प्रदायों में और स्याद्वाद और समन्वयवाद का सूत्र देने वाले धर्म-संघों में होता है- और वह भी प्राणशून्य, निर्थरक तथ्य को लेकर। लेकिन इन साधारण बातों में उलझने से हमारी आत्मसाधना कितनी दूर खिसकती जा रही है, इससे हम प्रायः अनजान हैं। यही तो है शव की शल्क-चिकित्सा और प्राणों की उपेक्षा। निश्चय की साक्षात् हत्या और व्यवहार की सतर्क उपासना। यों तो जहां संस्थान और समूह होता है वहां निश्चय की भांति व्यवहार भी नितान्त अपेक्षित होता है और कभी-कभी निश्चय से बढ़कर भी। लेकिन इनका अर्थ यह तो नहीं कि निश्चय का गला घोंटकर व्यवहार की साधना करनी चाहिए।

हमारे आलोच्य विषय होने तो चाहिए- साधना किसे कहते हैं? आत्महित किसमें है? स्वाभावोन्मुखता के स्थान पर विभावोन्मुखता तो नहीं आ रही है? हमारे सिद्धान्तों का रहस्य क्या है और शब्द-रचना कैसी है? हम आगमों का

आराधन भी करते हैं या पूजा मात्र? पर हम आन्तरिक गवेषणा से कोसों दूर हो बाह्य उलझनों में ही उलझ जाते हैं। जैसे कोई कहता है भगवान् महावीर कुमार थे और कोई कहता है विवाहित। कई आगम 84 मानते हैं, कई 45 और कई 32। कई सम्वत्सरी पंचमी की मनाते हैं तो कई चतुर्थी की और कई चतुर्थी-पंचमी दोनों की। कई पांच प्रतिक्रमण की विधि का समर्थन करते हैं तो कई एक प्रतिक्रमण को करणीय बताते हैं। कई भगवान् के जन्म-स्थान और जन्म-तिथि को लेकर विवादग्रस्त होते जा रहे हैं। कई भगवान् के सवस्त्र और निःवस्त्र की चर्चा में लगे हुए हैं। ये सारी इतिहास की चीजें हैं। जहां एक तथ्य को लेकर अनेक धाराएं आती हों, इतिहासकार भी नहीं उलझते, प्रत्युत सभी का उल्लेख करके सत्य का निर्णय पाठकों पर छोड़ देते हैं। वहां हम इन छोटी-छोटी वातों को लेकर मान्यताओं में ही नहीं, मनों में भी बहुत बड़ी विभेद रेखा खींचे हुए हैं।

भगवान् महावीर ने जो तथ्य दिए, उनके प्रति भी हम न्याय नहीं कर रहे हैं। उनके आगमों की जो शब्द-रचना है, आज उन शब्दों का अर्थ बदल गया। परिणामतः कोई उन शब्दों के पूर्ववर्ती अर्थ को लेकर और कोई उत्तरवर्ती अर्थ को लेकर परस्पर वितथ आरोप लगाते हैं और झगड़ते हैं।

भगवान् महावीर का सुझाव ही नहीं, स्पष्ट आदेश था कि जहां सत्यता व युक्तिमत्ता हो उसी को अपना सिद्धान्त मानो, पर अपने सिद्धान्तों पर युक्ति को घसीटने का आग्रह मत करो। उपाध्याय यशोविजयजी ने इसी तथ्य को अध्यात्मोपनिषद् में इस रूप में रखा है-

मनोवत्सो युक्तिगवीं मध्यस्थस्यानुधावति।
तामाकर्षति पुच्छेन तुच्छाग्रह मनः कपिः।।

-अर्थात् मध्यस्थ व्यक्ति का मन-रूप बछड़ा युक्ति रूपी गाय के पीछे-पीछे चलता है और आग्रही व्यक्ति का मन-रूप बन्दर युक्ति रूपी गाय की पूंछ पकड़कर अपनी ओर खींचता है। लेकिन हित गाय के पीछे चलने में है या उसे अपनी ओर खींचने में, इसे हम सब जानते हैं। फिर भी हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता। अगर इस ओर ध्यान केन्द्रित कर सकें तो जड़ को जलाकर पत्तों की सुरक्षा करने वालों की गणना में नहीं आएंगे और एक ही वृक्ष की विभिन्न शाखाओं की भांति हमारा जो अस्तित्व है उसमें अगर एक-दूसरे के विलीनीकरण का सोचा गया तो जड़ को जलाकर पत्तों की सुरक्षा जैसा ही हमारा प्रयत्न होगा। एक भारण्ड पक्षी जिसके कि दो मुंह होते हैं, वह एक मुंह को विष खिलाकर दूसरे के जीवन की कामना करे- कितना असंभाव्य है? वैसा ही औरों को मिटाकर स्वयं को सफल

बनाने का प्रयास होगा।

एक समय था, जब आग्रह भाव, वाद-विवाद आदि को कुत्सित नहीं माना जाता था। सभी क्षेत्रों में एक-दूसरे को परास्त करने की भावनाएं बल पकड़ रही थीं। सारा दृष्टिकोण अभेद से भेद की ओर मुड़ा हुआ था। उस स्थिति में भी धर्म-संघों के पारस्परिक वैमनस्य, तनाव, आग्रहशीलता श्लाघनीय नहीं थे, तब आज तो अन्यान्य क्षेत्रों में भी समन्वय के सिद्धान्त को क्रियान्वित किया जा रहा है। राजनीति में भी भावात्मक एकता की चर्चा ही नहीं, अभियान चलाए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में धर्म-संघों का यह अलगाव कोई क्षम्य कर सकेगा?

भेद-भाव को पनपाकर हम भगवान् की उपासना के बजाय कहीं उपहास तो नहीं कर रहे हैं? युग का तकाजा है कि हम सब खरबूज की तरह बाह्य भेद रखते हुए भी अन्तर में एक हो जाएं। यही भगवान् महावीर की सच्ची उपासना होगी। सब मार्ग सब तरह से प्रशस्त है। केवल कार्य करने की जरूरत है। देखें, हम अपने इप्सित को कितनी शीघ्रता से साध सकते हैं।

कविता

श्रद्धा-सुमन

आ गया आ गया शुभ दिन आ गया,
आनन्द अपार आज सब को आ गया।

मां पांची ने गोद खिलाए
पिता जयचन्दलाल जी भी खूब हरशाए
लड्डू बटवाए बाजे बजवाए
रूप का उजाला कर आंगन छा गया।

सद्गुरू तुलसी मन को भाए
साधु बन गए आचार्य कहलाए
कीर्तिपताका सारे जग में छा गया।

इन सन्तों की यही है निशानी
अंखियों से बरसे स्नेहिल पानी
जो भी आया वही अपना दिल दे गया।

युग-युग जीओ गुरू जी हमारे
जन-जन के जो बने है सहारे
मानव मंदिर आज सारे विश्व को भा गया।

-श्रीमती किरण गुप्ता, रोहतक

मन्त्रदाता गुरू

○ साध्वी मंजुश्री

मन्त्र-जाप में, मन्त्र-जाप से पहले, बीच-बीच में और बाद में भी मार्गदर्शक गुरू का उपस्थित रहना जरूरी है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र उन्हें आत्मसात् होता है। साधक के भटकाव की हर आहट पदचाप को उनके कान सुन सकते हैं। ऐसे गुरू द्वारा दिया-बताया मन्त्र सधता है।

मन्त्र्यन्ते मन्त्रद्यन्ते गुप्त भाषयन्ते मन्त्र सिद्धिरिति मन्त्र :

जो मान्त्रिक गुह्य रूप से मन्त्र देता है, बोलता है- वह गुरु, शिष्य को गुप्त रूप से मन्त्र देता है। क्योंकि गुरू स्वयं मन्त्र है। उसका दिया मन्त्र फलित होता है।

एक साधक ने श्रीराम कृष्ण परमहंस से प्रश्न किया- ''मन्त्र क्या है और मन्त्र-जाप से क्या फल मिलेगा?'' परमहंस ने कहा- ''मन्त्र फलप्रदायक तभी होता है, जब मन्त्र योग्य मन्त्र का अधिकारी गुरु मिले।''

मन्त्र-साधना में विधि-विधान की अपेक्षा के साथ गुरुगम्य मन्त्र होना चाहिए, सिद्ध होना चाहिए, सिद्ध पुरुष के मार्गदर्शन से मन्त्र-सिद्धि का उपयोग करना चाहिए।

ऊँकार, ह्रींकार, रामनाम तथा पंच परमेष्ठि मन्त्र गायत्री आदि मन्त्रों की साधनाएं निर्दोष हैं, इनमें सफलता है न कि नुकसान है। और यदि भूत-पिशाच यक्ष व्यन्तरादि देवों को वश करना है तो पूर्ण सावधानी की आवश्यकता है, उसमें मन्त्रदाता मन्त्रविद् पास रहना चाहिए, वरना विपत्तियां पहाड़ बन टूट पड़ेगी।

एक गांव के बाहर एक कुआं था। उसमें प्रचुर मात्रा में धन था लेकिन उस कुएं में एक भूत रहता था। वह किसी को पानी तक नहीं पीने देता था।

उस गांव में एक मन्त्र-साधक आया। उसने कुएं में अपार धन-राशि समझ उसे निकलने का निश्चय किया। उसने सोचा, मन्त्र द्वारा भूत को वश में करूंगा, तब गांव वाले लोगों ने उसको मना किया कि आप दुस्साहस न करें। वह शक्तिशाली है। लेकिन उस साधक ने नहीं माना।

रात्रि के बारह बजे उस कुएं के पास वह था और उसने वहां एक घेरा बनाया। उसके बीच में अपना आसन लगाकर बैठ गया। फिर मन्त्रोच्चार प्रारम्भ किया कि इतने में ही महाविकराल रूप धारण कर भूत उसे कुएं से बाहर निकला और उसके सामने खड़ा हो गया।

उस मन्त्र-साधक ने सोचा था कि घेरे के अन्दर भूत नहीं आ सकेगा, लेकिन पलक मारते ही वह भूत उस साधक की गर्दन पकड़ कर उसको एक फर्लांग दूर एक खेत में फेंक दिया। तत्क्षण उसके प्राण उड़ गये।

इसलिए पूर्ण मन्त्रज्ञाता सिद्ध पुरुष गुरू की शक्ति की परम आवश्यकता है।

गुरुकुल: लोकस्थापित और लोक समर्पित शिक्षा व्यवस्था

शिक्षा निर्धारण में अक्सर सरकार से उम्मीदें लगाई जाती हैं, और कोसा जाता है। जबकि शिक्षा लोक विषय है, उसमें शासन का हस्तक्षेप पतन की ओर ले जाता है। विश्व के इतिहास में सबसे सुदृढ शासन व्यवस्थाओं में से एक चोलों की शासन व्यवस्था का मूल उनकी लोक शिक्षा पद्धति थी जोकि समितियों द्वारा संचालित की जाती थी। प्राचीन भारतीय काल में लंबे समय तक अध्ययन अध्यापन के प्रधान केंद्र गुरुकुल हुआ करते थे, जहां दूर दूर से ब्रह्मचारी विद्यार्थी, अथवा सत्यान्वेषी परिव्राजक अपनी अपनी शिक्षाओं को पूर्ण करने जाते थे। गुरूकुल व्यवस्था लोक द्वारा स्थापित और समर्थित थी और लोक को ही समर्पित भी। आज की तरह सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाए जाते थे। पाठ्यक्रम पूरी तरह शासकीय हस्तक्षेप से मुक्त थे और इसलिए तब की शिक्षा व्यवस्था भ्रष्टाचार से भी मुक्त थी। आज भारत में शिक्षा व्यवस्था भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी पनाहगार है। हालांकि सबको ज्ञान उपलब्ध कराने और शोध कार्यों के लिये आश्रमों, गुरुकुलों, परिषदों, सम्मेलनों और विश्वविद्यालयों का विकास में सत्ताओं का सहयोग अपेक्षित था। विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में पाटलिपुत्र, नालन्दा, ओदंतपुरी, तक्षशिला, विक्रमशिला, सोमपुरा, जगद्दला, वल्लभी आदि की स्थापना ने भारत को शिक्षा के क्षेत्र में शीर्ष पर स्थापित कर दिया। शिक्षा में लोकानुग्रह के अभाव से आज भारत में शिक्षा के स्तर में आयी भारी गिरावट के कारण निराशा और दिशाहीनता की स्थिति निर्मित हुई है। पतन की स्थिति यहां तक पहुंच गयी है कि आज विश्व के श्रेष्ठ 200 विश्वविद्यालयों में भारत के एक भी विश्वविद्यालय का नाम नहीं है। इसके लिए हमारी शिक्षा नीति भी कम दोषी नहीं है। प्राचीन भारतीय साहित्यिक उल्लेख स्पष्ट करते हैं कि तब इस बात पर जोर दिया जाता था कि ज्ञान को शासन का माध्यम बनाया जाए। लेकिन वह शासन स्थापित करने के लिए ज्ञान का प्रयोग डर और नैतिकता नहीं, जागरूकता स्थापित करने के लिए किया जाए। अब सवाल है कि ऐसा ज्ञान कहां से प्राप्त हो? इस ज्ञान का पाठ्यक्रम क्या हो उसके लिए कहा गया है कि व्यक्ति संस्कृति से शिक्षित होता है, पुस्तकों से नहीं। यानि इस ओर संकेत है कि तब की शिक्षा में लोकनीतियों और लोक परंपराओं का प्रत्यक्ष प्रभाव था। शिष्य गुरु के पास रहकर उसके व्यक्तित्व

और आचरण से सीखता। गुरु और शिष्य के आपसी व्यवहारों की एक संहिता होती थी और उसका पूर्णतया पालन किया जाता था। आज की भांति उस समय की शिक्षा आज की तरह आजीविका मूलक नहीं थी। वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल में शिक्षा को धार्मिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व माना जाता था जिसके कारण आश्रमों, गुरुकुलों, परिषदों और सम्मेलनों में समाज ने स्वस्फूर्त दायित्व सुनिश्चित किये हुये थे। शिक्षा को आत्मज्ञान का माध्यम स्वीकार किये जाने के कारण समाज का सहज दायित्व तत्कालीन समाज की जागरूकता का प्रमाण है जो आज कहीं दिखाई नहीं देती। यह सब घटने की एक वजह और भी है, किसी भी व्यवस्था का स्तंभ उसका संचालक होता है तो सबसे पहले बात कुलों के मुखिया यानि कुलपति की।

जहां आज इलाहाबाद विश्वविद्यालय है, उसी के पार्श्र्व में कभी भरद्वाज मुनि का आश्रम हुआ करता था। इस आश्रम में दूर-दूर से लोग शिक्षा पाने के लिए आते थे, आश्रम में कभी दस हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे, साथ-साथ रहते थे और उनके संरक्षक के रूप में मात्र भरद्वाज मुनि थे। भला किसी का दुस्साहस कि अपने गुरू की अनुमति के बिना कोई पत्ता भी खड़खड़ा जाए। स्थावर और जंगम करबद्ध मुद्रा में गुरू के आदेश की प्रतीक्षा में पलक-पांवड़े बिछाये रहता है। भरद्वाज ने स्वयं को इस संस्था का कुलपति कहा है। 10 हजार छात्रों को एक अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाना पढ़कर असंभव सा लग सकता है लेकिन भरद्वाज ने कोई कीर्तिमान नहीं रचा था। उस दौर की शिक्षा व्यवस्था में कुलपति कहलाने का अधिकार प्राप्त करने की कुछ शर्तें थीं। स्मृति ग्रंथों में उल्लेख है कि "मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादि पोषाणात। अध्यायपति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः", यानि जो दस हजार मुनि पुत्रों को पोषण साथ शिक्षा उपलब्ध कराए वह कुलपति कहा जाएगा।

प्राचीनकाल में ऐसे ही धौम्य, च्यवन, द्रोणाचार्य, संदीप, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, गौतम, भरद्वाज जैसे कुलपति थे। बौद्धकाल में बुद्ध, महावीर और शंकराचार्य की परंपरा से जुड़े गुरुकुलों ने भी सदियों तक भारत को प्रकाशित किया और भारतीयों को गणित, ज्योतिष, खगोल, विज्ञान, भौतिक के ज्ञान से समृद्ध किया। हम अपनी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से कुछ सीख कर अपनी नई शिक्षा नीतियों को दिशा दे सकते हैं। कोई भी व्यवस्था एक क्रमिक विकास का परिणाम होती है, पूरी व्यवस्था को साबुत हटाकर नई व्यवस्था नहीं लाई जा सकती लेकिन हम दोनों व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके तत्वमसि, यानि काम की बातें ग्रहण जरूर कर सकते हैं।

-अरुण कुमार पाण्डेय

सुबह सलोनी चम चम चम

एक थी सुनहरी चिड़िया। नदी किनारे उसका घोंसला था। उसके नन्हें-मुन्हें बच्चे थे। बड़ा प्यारा सा परिवार था। सूरज निकलने से पहले वह बच्चों को जगा देती। बच्चे चीं-चीं करके अपनी आंखें खोलते, नहीं-नहीं हमें सोने दो। हमें खूब नींद आ रही है।

सुनहरी चिड़िया बोलती, देखो सूरज की किरणें कब की आंगन में नाच रही हैं। खूबसूरत फूलों पर ओस की नन्हीं-नन्हीं बूंदें झिलमिला रही हैं। बहुत सारे फूल खिले हैं। वह सबके सब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। चलो हम खेतों में ज्वार चुगेंगे, उठो जल्दी उठो।

बच्चे फिर चीं-चीं करते अपनी आंखें खोलते, चिड़िया मम्मी को बहुत प्यार आता फिर गुस्सा भी आता देखो कितनी प्यारी सुबह है लेकिन सुस्ती है कि इनका पीछा ही नहीं छोड़ती, न जाने कैसे बच्चे हैं। नींद के अलावा इन्हें कुछ अच्छा नहीं लगता और मैं हूं कि इनकी कैदी बन गयी हूं। वह मन ही मन सोचने लगती।

एक दिन नीली मछली ने नीचे नदी में से धीरे से पुकारा, ‘‘ऐ सुनहरी चिड़िया क्या अभी तक सो रही हो? देखो सूरज कितना चढ़ गया है।’’

सुनहरी चिड़िया बड़ी शर्मिदा हुई और कहने लगी, ‘‘क्या बताएं मछली रानी! इन बच्चों की वजह से मैं तो सचमुच परेशान हो गयी हूं। कई दिनों से मेरी सुबह की सैर छूट गयी है। मेरे नन्हें बच्चे बस सोते ही रहते हैं और मुझे भी नहीं छोड़ते। बस इनके साथ ही देर तक मैं भी दुबकी पड़ी रहती हूं। जब इन्हें भूख लगती है तो घर से बाहर निकलती हूं। पास ही ज्वार का खेत है, दाने चुगती हूं और चोंच में भर-भर कर लाती हूं, इन्हें खिलाती हूं। फिर खुद खाती हूं और सो जाती हूं।’’

नीली मछली हंसी और कहने लगी, ''सच सुनहरी चिड़िया, बच्चों को पालना, उन्हें बड़ा करना और अपने सारे शौक छोड़ देना इसका भी अपना एक अलग मजा है। अब मुझे ही देखो, तुम्हारे सिर्फ तीन बच्चे हैं, मेरे तो कितने हैं लेकिन हां, मैं इनसे इतना लाड़ नहीं करती, उन्हें बिल्कुल सुबह से ही लेकर निकलती हूं। उनके लिए नदी में भोजन ढूंढती हूं, उन्हें अपनी जान की रक्षा करना सिखाती हूं और फिर उन सबको अपने ठिकाने पर छोड़कर अपने दोस्तों की कुशल पूछने निकल पड़ती हूं।''

उनकी बातें सुनकर चिड़िया के बच्चे भी उठ गए थे। मछली मौसी की बातें सुनकर उन्हें यह तो लगा कि वह ज्यादा देर सोकर अच्छा नहीं करते हैं। इसकी वजह से उनकी मम्मी भी परेशान होती हैं। वह थोडे-थोडे, समझदार होने लगे थे। नन्हें रीतू ने कहा मौसी आप बहुत सुबह उठती हैं और अपने सब बच्चों को लेकर सैर को निकलती हैं। कैसा लगता है वहां?

अरे वाह! तुम तो जाग गए? खुशी-खुशी मछली मौसी ने उन्हें देखा और बोली, ''देखो भई, चिड़िया रानी तुम भी सुबह-सुबह इन बच्चों को लेकर घूमने जाया करो। बहुत ही अच्छा लगता है। सुबह के समय बगिया में प्यारे-प्यारे फूल खिलते हैं, खूब ठंडी-ठंडी हवा चलती है, किरणें जाती हैं और हमारी नदी की लहरों के साथ खेलती हैं, नाचती हैं। बहुत मजा आता है।''

अबके नन्हीं मीतू बोली, ''वो मम्मी, हम सुबह तुम्हारे साथ उठेंगे। जल्दी उठा देना हम सब चलेंगे। कल से बिल्कुल सुस्ती नहीं करेंगे। और हां, मम्मी यह तुम रोज-रोज जो खाना लाती हो न, वहां हमें भी लेकर चलो न, हम भी चुगना सीखेंगे।''

सुनहरी चिड़िया की आंखों में चमक आ गयी। उसने उन्हें दुलारते हुए कहा, ''अच्छा, अब सबके सब उड़ने के लिए तैयार हो जाओ, डरना नहीं, सब बच्चों ने खुशी-खुशी अपनी मौसी को चूम लिया।''

नीली मछली उन्हें देखकर बहुत खुश हुई। बच्चे उसे बहुत प्यारे और खूबसूरत लगे।

दूसरे दिन मछली ने देखा कि चिड़िया ने नन्हें-नन्हें बच्चे सूरज उगने से पहले नदी किनारे यह गीत गा रहे थे...

सुबह सलोनी चम चम चम
अच्छे प्यारे बच्चे हम
सूरज मामा आओ न
प्यारी किरणें लाओ न
हम खेलेंगे टम टम टम
हम नाचेंगे छम छम छम।

प्रस्तुति : दिव्या जैन

ब्रह्मज्ञानी रैक्व की कथा

छान्दोग्य उपनिषद में ब्रह्मवेत रैक्व की कथा बहुत प्रचलित है। एक गाड़ीवान होते हुए भी रैक्व ब्रह्म-ज्ञान का पूर्ण ज्ञाता था। रैक्व के ब्रह्मज्ञान ने जनश्रुति की आंखें खोलीं थीं। कहते हैं प्राचीन काल में जनश्रुत नाम का एक कुल हुआ है। उस कुल के राजा अपनी दानवीरता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। वे श्रद्धापूर्वक बहुत-सा दान दिया करते थे। आगे चलकर इसी कुल में जनश्रुति नाम का एक राजा हुआ, जो महावृष देश का राजा बना।

जनश्रुति ने भी अपने पूर्वजों की परंपरा बनाए रखी। उसने अपनी प्रजा के हित में अनेक कल्याणकारी कार्य किए। राज्य में राजमार्गों पर विश्राम-स्थल बनवाए, जिनमें यात्रियों को मुफ्त में भोजन और ठहरने के लिए आश्रय दिया जाता था। उसने रोगियों के लिए अनेक रुग्णालयों (अस्पतालों) का निर्माण करवाया, जिनमें रोगी मुफ्त में अपने रोगों की चिकित्सा करवाते थे। वृद्ध एवं अपंग लोगों को आश्रय मिलता था। वह भी राजकीय खर्चे से। राजा ने प्रजा पर जो भी कर लगाए थे, वे सब न्याय-संगत थे। प्रजा के हित में जो भी उसे उचित सूझता, तत्काल बिना किसी विलंब के कर डालता था।

ऐसे ही अनेक कारणों से प्रजा उससे पूरी तरह संतुष्ट थी और अपने राजा की समृद्धि के लिए सदैव कामना करती थी।

जनश्रुति की प्रसिद्धि धीरे-धीरे राज्य की सीमाओं से बाहर भी फैल गई। बाहर के व्यापारी उसके राज्य में आने-जाने लगे। व्यापार बढ़ा तो प्रजा और भी समृद्ध हुई और व्यापार पर लगे कर के कारण राजा का कोष भी भरने लगा। प्रजा राजा जनश्रुति की जय-जयकार करने लगी।

कहते हैं कि समृद्धि अपने साथ कुछ दुर्गुण भी लाती है। वैसा ही एक दुर्गुण राजा जनश्रुति में भी उत्पन्न हो गया।

समृद्धि पाकर वह अहंकारी हो गया। वह सोचने लगा, 'मैं ही अपने नागरिकों का अन्नदाता हूं। मेरे ही कारण राज्य में समृद्धि आई है। दान आदि करके मैंने इतने पुण्य कमा लिए हैं कि अब तो स्वर्ग में देवता भी मुझ पर प्रसन्न होंगे।'

एक दिन की बात है, संध्या का समय था। राजकार्यों से निवृत्त होकर राजा महल की छत पर एक आरामदायक पलंग पर अधलेटा-सा दूर आकाश की ओर निहार रहा था। तभी दूर से उड़ते हुए दो हंस उसे अपनी ओर आते दिखाई दिए।

हंस जब राजा के निकट पहुंचे, तो राजा ने एक हंस को यह कहते सुना,

"मित्र! यहां जरा संभलकर उड़ना। नीचे राजा जनश्रुति बैठा है।"

"फिर क्या हुआ? राजा जनश्रुति में ऐसी कौन-सी विशेष बात है जिसके कारण मुझे उसके ऊपर नहीं उड़ना चाहिए?" दूसरे हंस ने उपेक्षा से कहा।

"मित्र!" पहला हंस पुनः बोला, "इस राजा ने अपने पुण्य-कर्मों से इतनी ख्याति अर्जित कर ली है कि इसके शरीर से अब एक विशेष तेज निकलने लगा है। तुम नीचे उड़े तो तुम्हारे जल जाने का भय है।"

"क्यों मजाक करते हो मित्र? क्या इस राजा का तेज गाड़ीवान रैक्व के तेज से बढ़कर है?" दूसरा हंस बोला और अपने साथी हंस के साथ आगे बढ़ गया।

हंस तो चले गए, परंतु राजा जनश्रुति की चिंता बढ़ने लगी। वह सोचने लगा, "कौन है वह गाड़ीवान रैक्व, जिसने मुझसे भी ज्यादा पुण्य अर्जित कर लिया है?"

उस रात राजा को नींद नहीं आई। उसके मस्तिष्क में सिर्फ रैक्व का नाम ही गूंजता रहा। वह सोचता रहा, 'प्रातः उठकर सबसे पहले रैक्व को खोज निकालने का काम ही करूंगा। अपने सेवकों को भेजकर उसे राजसभा में बुलवाऊंगा। फिर देखूंगा कि कैसा है वह व्यक्ति रैक्व?'

सुबह हुई तो राजा को जगाने के लिए शुभचिंतक वहां पहुंचे और उन्होंने 'प्रभाती' (भोर का राग) गाना आरंभ कर दिया, 'जागिए कृपानिधान! जागिए देवतुल्य!' ऐसे वचन कहते हुए उन्होंने राजा की स्तुति की।

अलसाया-सा राजा उठा। हंसों की बातें फिर उसकी स्मृति को कचोटने लगीं। अचानक वह स्तुतिवाचकों पर झल्ला उठा, "बस करो यह झूठी प्रशंसा। आगे से इस तरह मेरी प्रशंसा मत करना। मैं इस योग्य नहीं हूं।"

स्तुतिवाचक राजा के मुख से ऐसे वचन सुनकर स्तब्ध रह गए। ऐसी क्या बात हो गई है हमारे महाराज के साथ, जो ये इस प्रकार की बातें कर रहे हैं? एक चारण (स्तुतिवाचक) ने डरते-डरते पूछ ही लिया, "स्वामी! ऐसी क्या बात हो गई जो आप इतने चिंतित हैं?"

राजा ने उनके समक्ष हंसों द्वारा किया गया सारा वार्तालाप कह सुनाया। फिर उसने स्तुतिवाचकों से कहा, "दूतों को यहां उपस्थित करो। हम उन्हें कुछ कार्य सौंपना चाहते हैं।"

राजा के आदेश से थोड़ी ही देर बाद दूत राजा के समक्ष उपस्थित हो गए।

"हमारे लिए क्या आदेश है, स्वामी?" सिर झुकाकर दूतों ने पूछा।

"जाओ, चारों दिशाओं में जाकर पुण्यात्मा रैक्व की खोज करो।" राजा ने आदेश दिया। (क्रमशः)

प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है सब्जियों के रस का सेवन

ताजे फलों और सब्जियों का रस शरीर में रक्त की शुद्धि और शरीर को ऊर्जा देने में सहायक होते हैं। जब भी रस पिएं, ध्यान दे कि सब्जियां और फल ताजे होने चाहिए। रस के आवश्यक पदार्थ रक्त द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में शीघ्रता से पहुंच जाते हैं और शरीर को स्वस्थ रखते हैं। हर सब्जी व फल का रस शरीर को अलग ढंग से लाभ पहुंचाता है।

<u>पालक का रस</u>

पालक का रस आंतों की सफाई के लिए बहुत अच्छा होता है। पालक के रस में विटामिन ई की मात्रा प्रचुर होती है। इसे गाजर के रस के साथ मिलाकर भी पिया जा सकता है। कब्ज की शिकायत होने पर ताजा पालक का रस लाभ पहुंचाता है। गर्भवती, स्तनपान करने वाली स्त्रियों के लिए पालक का रस बहुत गुणकारी होता है। पथरी के रोगियों को इसका सेवन बिना डॉक्टर के परामर्श के नहीं करना चाहिए।

<u>शलजम का रस</u>

शलजम फल और पत्तियां दोनों ही स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं। शलजम में विटामिन 'सी' और कैल्शियम की मात्रा अधिक होती है कैल्शियम की पर्याप्त मात्रा होने के कारण शलजम दांतों और हड्डियों के लिए लाभप्रद होता है। शलजम का स्वाद हल्का सा खारा होने के कारण नींबू के रस के साथ मिलाकर लेना चाहिए। शलजम का रस नियमित लेने से खांसी में भी आराम मिलता है।

<u>टमाटर का रस</u>

टमाटर में विटामिन 'डी', 'ई', कैल्शियम पोटाशियम और खनिज आदि काफी मात्रा में होते हैं। टमाटर का रस शरीर की पाचन क्रिया और रक्त संबंधी समस्याओं को दूर करता है। अधिक खट्टे टमाटर का रस अकेले न लें। उसमें मौसमानुसार गाजर व पालक मिला कर लेना चाहिए। गाजर व पालक का रस मिलाकर पीने से खून की कमी भी दूर होती है। बच्चों के विकास के लिए टमाटर का लाभप्रद होता है। गुर्दे में पथरी वाले रोगियों को टमाटर का रस डाक्टरी सलाह के अनुसार लेना चाहिए।

<u>बंदगोभी का रस</u>

बंदगोभी का रस वजन कम करने में सहायक होता है। रक्त को शुद्ध करने और मांसपेशियों के निर्माण में भी बंद गोभी का रस सहायक होता है। इसमें विटामिन 'सी' काफी मात्रा में होता है। इसका रस मसूड़ों की बीमारी में भी लाभ पहुंचाता है।

रस पीने से पहले कुछ बातों का ध्यान

रखना चाहिए। रस ताजा निकाल कर उसी समय पीना चाहिए। निकाल कर रखा हुआ रस न पिएं। रस निकालने वाली सब्जियों को अच्छी तरह धोकर, पोंछ लें। ध्यान रखें सब्जियां ताजी व साफ-सुथरी हों। गली-सड़ी सब्जियों का रस लाभ के स्थान पर नुक्सान पहुंचाता है।

<u>गाजर का रस</u>

गाजर के रस में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में मिलता है। उसके अतिरिक्त इसमें फोलिक एसिड, विटामिन 'बी' व ऑयरन मिलता है।

<u>खीरे-ककड़ी का रस</u>

खीरे-ककड़ी का रस गुर्दे व मूत्राशय की बीमारियों के लिए गुणकारी होता है। खीरे, ककड़ी के रस के सेवन से पेशाब अधिक बनता है। खीरा-ककड़ी त्वचा के लिए उत्तम माने जाते हैं।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

चुटकुले

1. टीचर- बिना ऑक्सिजन के हमारा जिंदा रहना मुमकिन नहीं और इस गैस की खोज 1773 ईस्वी में हुई थी।
पिंटू- सर वह तो ठीक है, लेकिन फिर 1773 से पहले लोग धरती पर जिंदा कैसे थे?

2. टीचर- चांद पर पहला कदम किसने रखा था?
बंटी- जी, नील आर्मस्ट्रॉन्ग।
टीचर- राइट। और दूसरा?
बंटी- दूसरा भी उसने ही रखा होगा सर। एक कदम चलकर वो वापस थोड़े ही आ गया होगा।

3. इंटरव्यूअर- हम आपको जॉब पर रखने से पहले जानना चाहेंगे कि आपको कितने सालों का तजुर्बा है?
कैंडिडेट- माफ कीजिएगा सर, सालों का तो नहीं, लेकिन तीन सालियों का तजुर्बा जरूर है।

4. रामू- ये छोटा मेडल तुम्हें क्यों मिला?
श्यामू- गाना गाने के लिए।
रामू- और यह बड़ा वाला?
श्यामू- अपना गाना बंद करने के लिए।

प्रस्तुति : यश

मासिक राशि भविष्यफल-अक्टूबर 2016

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पर्याप्त लाभ देने वाला है। इस माह किन्हीं जातकों के कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की भी आशा है। इन जातकों के मित्र इनकी मदद को आगे आयेंगे, किन्तु परिवार में मन मुटाव संभव है, जिससे मानसिक उद्विग्नता रहेगी। अपनी मां की सेहत का ध्यान रखें। विद्यार्थियों की मेहनत सफल होगी।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है, पर व्ययाधिक्य भी होगा। किसी नये कार्य की योजना भी बन सकती है। कार्य रूक-रूक कर बनेंगे। शत्रु आपको परेशानी में डाल सकते हैं। बुजुर्गों की राय से कार्य करें, सफलता मिलेगी। किन्हीं जातकों का रूका हुआ धन इस माह मिल सकता है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक लाभप्रद है। व्ययाधिक्य चिंता का कारण बन सकता है। लड़ाई झगड़े से दूर रहें। शत्रु सिर उठाएंगे, किंतु उन्हें हार का सामना करना पड़ेगा। कुछ छोटी-बड़ी यात्राओं के भी योग बनेंगे जिनमें सावधानी अपेक्षित है। समाज में यश-मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये होगा। कार्य क्षेत्र में कोई परिवर्तन भी करना पड़ सकता है। कुछ यात्राएं लाभप्रद हो सकती हैं, किंतु राह में सावधानी अपेक्षित है। पत्नी तथा बच्चों की सेहत की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस माह योजनाएं अधिक बनेंगी, किंतु उनका क्रियान्वयन कम होगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभप्रद सिद्ध होगा। माह का आरंभ और अंत अत्यधिक शुभ है तथा मध्य शुभ फल दायक है। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिये नई योजनाएं बनेंगी। सैर सपाटे के मौके आयेंगे। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय से व्यय अधिक कराने वाला है। किन्हीं जातकों को व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की परिस्थिति भी आ सकती है। शत्रु सिर उठायेंगे, पर आप उन्हें दबा लेंगे। अपनी

तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ फल दायक है। व्यापार में लाभ तो होगा ही। जिनका धन रूका हुआ है, उनके पैसे मिलने के आसार हैं। कई विद्यार्थियों को, उनके कैरियर का सही चुनाव करने में सफलता मिलेगी, जिससे मन में प्रसन्नता होगी, यात्राएं लाभप्रद रहेंगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से सावधान रहें।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। राजनीति में रूचि रखने वालों के लिये यह माह अच्छा साबित होगा। कुछ जातकों की समाज में यश-मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि संभावित है। छोटी-बड़ी यात्राएं होंगी। यात्राओं में लाभ की आशा भी की जा सकती है, किंतु दुर्धटना संभावित है।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध्य एवं संघर्ष पूर्ण परिस्थितियों से गुजरते हुए अर्थ प्राप्ति का रहेगा। हां कोई नई योजना बनाई जा सकती है या उसका क्रियान्वयन हो सकता है। कोई धार्मिक कार्य इन जातकों द्वारा किया जा सकता है। इन जातकों के हित मे रहेगा अगर वे अपने से ज्यादा असरदार आदमी से पंगा न लें। परिवार में सामन्जस्य बिठाने की कोशिश करें।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक कहा जाएगा। आपके पुराने लटके हुए काम फिर से शुरू होने का समय है। इस माह नई योजनाओं का श्री गणेश भी हो सकता है। किन्हीं जातकों को वाहन आदि से चोट भी लग सकती है। सरकारी कार्य करने वाले जातक भी अपने उच्चाधिकारियों से लाभान्वित होंगे।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिला कर शुभ फलदायक ही कहा जायेगा। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। नई योजनाओं का क्रियान्वयन भी संभव है। छोटी-बड़ी यात्राएं भी हो सकती हैं तथा वाहन सुख का लाभ भी मिल सकता है। संतान के विषय में भी कोई शुभ सूचना मिल सकती है।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मिलाजुला फल देने वाला है फिर भी आय से व्यय ही अधिक रहेगा। सरकार में कार्य करने वालों के लिये इस माह का मध्य अच्छा है। छोटी-बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे लाभ रहेगा। इन जातकों का इस माह स्वास्थ्य नरम रहेगा। किन्ही जातकों को रूका हुआ अपना पैसा मिल सकता है।

-इति शुभम्

Internet के साथ-साथ Innernet से जुड़े रहें

जन्म-दिवस आयोजन पर पूज्य गुरूदेव का उद्बोधन

25 सितम्बर, रविवार, जैन आश्रम, ध्यान-मंदिर हाल में अपने 78वें वर्ष-प्रवेश पर जन-समुदाय को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- अभी हम विज्ञान में अग्रणी अमेरिका -कनाडा-यात्रा से वापस आए हैं। आप और हम सब विज्ञान-युग में जी रहे हैं। विज्ञान ने आज पूरे मानव समाज को Internet के माध्यम से पूरे विश्व-क्षितिज से जोड़ दिया है। आज गूगल ने जैसे सर्वज्ञाता का स्थान ले लिया है। आप जिस किसी के बारे में जानना चाहें, गूगल-सर्च में जाएं, आपको जानकारी मिल जाएगी। इतना सब होते हुए भी आपका ध्यान मैं इस ओर खींचना चाहता हूं कि जितने आप Internet से जुड़ते जा रहे हैं, आप अपने Innernet से उतने ही कटते जा रहे हैं। विज्ञान की सुख-सुविधाओं ने पहले आपके शरीर की क्षमताओं को छीना। अब कंप्यूटर-टेक्नोलोजी आपकी बौद्धिक क्षमताओं को पंगु बनाने जा रही है।

इतना ही नही, इन भौतिक उपलब्धियों के समक्ष आप अपनी आध्यात्मिक एवं भावनात्मक मिठास को खोते जा रहे हैं। मैं कहना चहूंगा आप Internet के साथ-साथ Innernet से जुड़े रहें। अन्यथा आप संवेदना-शून्य रोबोट बनकर रह जायेंगें।

विज्ञान के हाथ में धर्म का चिराग चाहिए
सच को पाने के लिए खुला दिमाग चाहिए
धुंआ बनकर सौ वर्ष जीना पसंद नहीं,
चाहे घड़ी भर ही जिएं, लेकिन आग चाहिए।

जन्म-दिवस के संदर्भ में आपने कहा- आज इस शरीर के सतत्तर वर्ष पूरे हो गए हैं। यानि इस जीवन को जितने वर्ष मिले हैं, उनमें से सतत्तर कम हो गए हैं। इससे मेरे मन पर कोई भार नहीं है। क्योंकि लकीर का फकीर बन कर नहीं, हमने परंपरा-गत संन्यास को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। आप अन्य किसी धर्म-स्थान में जाते हैं, आपके मन में सहज ही संप्रदाय-गत विचार होता है आप दिगम्बर जैन मंदिर, श्वेताम्बर जैन मंदिर, स्थानक/तेरापंथ भवन में जा रहे हैं। यहां आते समय आपके मन में होता है आप मानव मंदिर जा रहे हैं।

मान्यताओं/परंपराओं से मुक्त सेवा, योगाभ्यास तथा आत्म-लक्षी दृष्टि से मानव स्वयं मंदिर बन जाए, यही हमारे मिशन का उद्देश्य है-

अर्हत्- उछ्वास का अनुभव लिया है हमने
आनंद- संन्यास का अनुभव लिया है हमने
महामना योगी आनंद-धन की तरह
आध्यात्मिक उजास का अनुभव लिया है हमने

आपने कहा- पूरे अमेरिका तथा कनाडा में इसी आत्म-भूमिका पर होने वाले प्रवचन

तथा तुरंत-प्रभावी योग-कक्षाओं की गूंज स्थान-स्थान से आने वाले फोन-संवादों से आज भी सुनी जा सकती है।

दिवंगत साध्वी दीपांजी की स्मृति में आपने कहा- हमारे धर्म-परिवार में सरलमना साध्वी मंजुश्रीजी, साध्वी चांदकुमारीजी एवं साध्वी दीपांजी इन तीनों की भगिनि-त्रिपुटी थी। कुछ वर्षों पहले साध्वीश्री मंजुश्री जी तथा अभी-अभी साध्वी दीपांजी के स्वर्ग-वास से करीब सत्तर वर्षों का सहवास बिछुड गया। फिर भी साध्वी चांदकुमारी जी ने प्रशंसनीय मनोबल का परिचय दिया। मरणोपरांत साध्वी दीपांजी का देह-दान संपूर्ण संत-समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया है। (उनकी स्मृति में धर्म-सभा ने दो मिनट का मौन मंत्र-पाठ किया)।

आपने कहा- सेवा-धाम हॉस्पिटल, मानव मंदिर गुरूकुल का नव-निर्माण तथा डिजिटल लाइब्रेरी कक्ष मानव मंदिर मिशन के बढते हुए कदमों के प्रत्यक्ष साक्षी है। इन सबमें साध्वी-समुदाय का निरंतर श्रम तथा देश-विदेश के निष्ठाशील समाज का प्रशंसनीय योग-दान है। इस अवसर पर मैं सबके प्रति अपना अहोभाव प्रकट करता हूं उपस्थित जन-समुदाय ने पूज्यवर के प्रवचन के प्रति बार-बार उल्लास एवं सम्मान प्रकट किया।

इस पावन प्रसंग पर पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने पूज्य आचार्यवर के प्रति मंगल कामना प्रकट की। मातृस्वरूपा साध्वी चांदकुमारी जी ने शाल द्वारा आपका वर्धापन किया। डॉ. विनीता गुप्ता द्वारा रचित काव्य का मनोहारी मंचन साध्वीश्री कनकलता जी के मार्ग-दर्शन में गुरूकुल की छात्राओं द्वारा किया गया, जिसके प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता जन-समुदाय ने बार-बार करतल-ध्वनि से की। इसी कड़ी में श्रीमती मंजुबाई जैन, नोएडा, श्रीमती शकुंतला राजलीवाल, हिसार, श्रीमती निर्मला पुगलिया, दिल्ली तथा श्रीमती प्रियंवता तिवारी, बैंगलोर ने अपनी-अपनी कविताओं/गीतिकाओं द्वारा पूज्य गुरूदेव के चरणों में अपने श्रद्धा-सुमन प्रकट किए। श्रीमती किरण गुप्ता की मधुर गीतिका पर उनकी पौत्रियां- केशवी (10) तथा ईशिका (6) के थिरकते हाथ-पांवों के नर्तन ने समा ही बांध दिया। दधीचि देह दान समिति दक्षिण दिल्ली के संयोजक श्री कमलजी खुराना ने जानकारी दी कि समिति की देखरेख में साध्वी दीपांजी का पार्थिव शरीर भगवान महावीर मेडिकल कॉलेज को सौंप दिया गया है। गुरूकुल के बालक-बालिकाओं ने अपनी हस्त-निर्मित कला-कृतियां पूज्यवर को भेंट की। सेवाभावी श्री राजेन्द्रजी जैनी देवी ने पूज्यवर को शाल भेंट की। साध्वी समताश्रीजी ने अपने संयोजन में गुरूकुल की प्रगति के बढते कदमों की चर्चा की। अरूण योगी ने दान-दाताओं की घोषणा करते हुए 15-16 अक्टूबर को दिल्ली

मानव मंदिर में दो दिवसीय योग तथा नाडी-परीक्षण एवं चुम्बक-चिकित्सा की जानकारी दी। आज का मधुर प्रसाद/भंडारा श्री राजेन्द्रजी जैनी देवी जैन, भोगल की ओर से रहा।

डिजिटल लाइब्रेरी कक्ष का लोकार्पण

आज के आयोजन का एक विशेष आकर्षण था गुरूकुल के छात्रों के लिए नव-निर्मित डिजिटल लाइब्रेरी कक्ष का लोकार्पण। कार्यक्रम के अंत में पूज्य गुरूकुल, पूज्या साध्वीश्री, साध्वी-समुदाय तथा गण-मान्य व्यक्तियों की उपस्थिति के बीच जब समाज-सेवी श्री गुलाब चन्दजी विमला देवी बरडिया ने जब नव-नर्मित डिजिटल लाइब्रेरी कक्ष का रिबन काटकर लोकार्पण किया तो जय-जय नाद से पूरा मानव मंदिर-परिसर गूंज उठा। सबके मुख पर मानव मंदिर मिशन के बढते चरणों की चर्चा थी।

(विदेश-यात्रा डायरी)

पर्युषण-आराधना का अर्थ है
परमात्मा की ओर आत्मा की यात्रा

लॉस एंजिलिस, केलिफोर्निया में पयुर्षण-आराधना के प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने अपने मंगल-प्रवचन में कहा- हर वर्ष हम पर्युषण-महापर्व की अष्ट-दिवसीय आराधना करते है, तपस्याएं करते हैं, आरती-पूजाएं करते हैं, प्रतिक्रमण के माध्यम से आलोचना करते हैं, अपनी भूलों को संशोधन करते हैं, मां त्रिशला के सपनों के अवतरण में दान-धर्म की बड़ी बड़ी बोलियां लेते हैं, परस्पर क्षमा लेने और देने के लिए मिच्छामि दुक्कडं/खमतखामणा करते हैं, इन सारी उपासनाओं/आराधनाओं के साथ जरूरी है कि परमात्मा की दिशा में हमारी आत्मा की यात्रा आगे बढे। चाहे कुछ कदम ही सही, किन्तु आत्म-यात्रा/सम्यग्-दर्शन यात्रा में प्रभु चरणों की दूरियां कम होनी चाहिए। वह तभी संभव होगा जब हमारे आचरण निर्मल और निर्ग्रन्थ होंगे। चित्त में राग-द्वेष की गांठे कमजोर होंगी। भगवद्-वाणी- जे उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा- उपशम कषाय से ही आराधना सफल हो पाएगी।

भारत की तरह अमेरिका-कनाडा में भी यहां का जैन समाज पूरे हर्ष-उल्लास से पर्युषण-आराधना करता है, परिणामतः मासखमण तप, बीस दिन, सोलह दिन और अठाई तप की झड़ी लग जाती है। प्रवचन, जनम-वाचन तथा प्रतिक्रमण में हजारों की संख्या में उपस्थिति विशेष प्रेरणादायी होती है। इन्टरनेशनल महावीर जैन मिशन द्वारा निर्मित जैन सेंटर ऑफ कोरोना भी धीमे-धीमे विशाल स्वरूप लेता जा रहा है। पूज्यवर के पर्युषण-प्रवास को सफल बनाने में श्री हरीश सुनील डागा, श्री जगन्नाथ उषा जैन, युवा नेता सुनील आशा डागा, श्री प्रमोद निधि जैन, श्री हिन्द भूषण सुनीता जैन, श्री सुरेश उषा जैन, श्री सतीश प्रभा जैन, संजय जैन आदि का विशेष योग-दान रहा। शिष्य योगी अरूण तिवारी की

योग-कक्षाओं ने पूरे समाज के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। निकट भविष्य में योगा-रिट्रीट रखने का भी निर्णय लिया गया।

पूज्य आचार्यवर ब्राह्मण-समाज ऑफ अमेरिका के वार्षिक सम्मेलन में

26-27-28 अगस्त, ब्राह्मण समाज ऑफ अमेरिका तथा ग्लोबल ब्राह्मण, इंडिया के संयुक्त अधिवेशन में Guest of Honour के रूप में अपने उद्‌बोधन में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- संस्कृत भाषा में ब्राह्मण का अर्थ है- ब्रह्म का वेत्ता। प्राकृत भाषा में ब्राह्मण अर्थात् मा हण- अहिंसा का आचरण करने वाला। आज मानव जाति के अज्ज्वल भविष्य के लिए अहिंसा ओर ब्रह्म-विद्या दोनों की अति आवश्यकता है। सृष्टि का अस्तित्व इन दोनों पर ही टिका है। इनके अभाव में मारक-संहारक अस्त्र-शस्त्रों की होड़ में विज्ञान की विनाश-लीला पूरी धरती को नरक बना देगी-

आपको लगता है हम विकास की ओर बढ रहे हैं
हमको लगता है हम विनाश की ओर बढ रहे हैं।
खिसकती जा रही है आपके पांवों तले की जमीन
आपको लगता है हम आकाश की ओर उड़ रहे हैं।

सैंकड़ों की संख्या में अपस्थित विद्वान ब्राह्मण समाज ने पूज्यवर के प्रवचन का बार-बार करतल ध्वनि से स्वागत किया। शिष्य योगी अरूण तिवारी के योग-प्रशिक्षण का सभी पर गहरा प्रभाव था। इस कार्यक्रम-संयोजना में समाज-सेवी श्री सुभाष प्रियंवदा तिवारी का सराहनीय योग-दान रहा।

पर्युषण-आराधना के पश्चात् कनाडा-यात्रा में विंडसर, लन्दन-ऑंटेरियो तथा मिसिसागा-टोरंटो में योगाभ्यास तथा पूज्य गुरूदेव के विशेष प्रवचन रहे। लंदन-ऑंटेरियो में प्रवचन तथा योगा-कार्यक्रम विशेष प्रभावशाली रहे। यहां के समाज ने अगले सत्र में योगा-रिट्रीट रखने का भी निर्णय लिया।

इस यात्रा-संयोजना में समाज-सेवी श्री अमृत किरण नाहटा, श्री चंदूलाल रंजना बेन मोरबिया, श्री हिम्मतभाई दुलारी बेन खंडोर तथा श्री ललित भाई रंजनाबेन पांसर की प्रशंसनीय सेवायें रहीं। लंदन भारतीय समाज पर श्री अमृत किरण नाहटा का अद्‌भुत प्रमेल प्रभाव देखने को मिला। पूज्य गुरूदेव के मिशन के प्रति इस परिवार का योग-दान विशिष्ट है। अमेरिका-कनाडा की लगभग दो-माही प्रभावी धर्म-यात्रा संपन्न करके पूज्य गुरूदेव शिष्य योगी अरूण के साथ 15-16 सितम्बर को भारत भूमि पर पधार गए, जहां पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में साध्वी-समुदाय, गुरूकुल के बच्चों/स्टाफ सदस्यों ने जय-जय नाद के साथ आपका भव्य स्वागत किया।

जैन साध्वी दीपा जी के स्वर्ग-वास के उपरांत देहदान का एक अनुकरणीय उदाहरण

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज की शिष्या साध्वी दीपा जी का स्वर्गवास दिनांक 07 सितम्बर 2016 को हो गया। उन्होंने मृत्यु से पहले ही देहदान का संकल्प किया था, लेकिन संघ के आचार्य की आज्ञा लेने की परम्परा है, गुरुदेव ने सहर्ष आज्ञा प्रदान करते हुये फरमाया कि साध्वी दीपाजी के देहदान से सम्पूर्ण संत समाज के लिए एक प्रेरणा होगी। साध्वीजी के मृत्यु के बाद भी उनका शरीर मानव सेवा में काम आएगा इस प्रकार साध्वी जी शरीर से भी अमर हो जायेंगी। मानव मंदिर-साध्वी-समुदाय, संस्था के पदाधिकारियों तथा हरियाणा, पंजाब, दिल्ली समाज की उपस्थिति के बीच ससम्मान 8 सितम्बर 2016, दिन-गुरुवार दोपहर को साध्वी जी का देहदान अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान (एम्स) के डॉक्टरों की देखरेख में सम्पन्न किया गया। साध्वी समताश्री व दधीचि देहदान समिति, ने देहदान की प्रक्रियाओं को सम्पन्न करवाया।

साध्वी की स्वर्गवास के समय पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज अपने शिष्य योगी अरुण के साथ अमेरिका यात्रा पर थे, अमेरिका यात्रा व पर्यूषण-आराधना सम्पन्न कर पूज्य गुरुदेव कनाडा की फ्लाइट पकड़ने के लिए लॉस-ऐंजेलेस एयरपोर्ट जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी भारत से फोन पर साध्वी कनक लताजी और संस्था के महामंत्री आर. के. जैन ने साध्वी दीपाजी के स्वर्गवास होने की खबर दी।

साध्वी मंजूश्रीजी, साध्वी चाँद कुमारीजी और साध्वी दीपाजी का उम्र भर का अटूट-साथ था और ये तीनों साध्वी त्रिपुटी-भगिनी गुरुदेव के मानव मंदिर हरियाणा और पंजाब का कार्य देखा करती थीं। साध्वी मंजूश्री का स्वर्गवास 2011 में ही हो चुका और वो सबसे बड़ी थीं लेकिन आज दीपाजी के देहदान से साध्वी चाँद कुमारीजी अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रही है। पूज्या महासती साध्वी मंजुलाश्री जी के मार्गदर्शन में साध्वी चाँद कुमारीजी, साध्वी कनक लताजी, साध्वी समताश्रीजी, साध्वी वसुमतीजी, मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चे, कार्यकर्ता गण तथा श्रावक समाज ने दिवंगत आत्मा की उच्चगति के लिए मंत्र-जाप व मंगल-पाठ किया। साध्वी चाँद कुमारीजी के संसार-पक्षीय भतीजे चाँद रतन दस्सानीजी परिवार का सराहनीय सहयोग मिला है ।

–ब्राह्मण समाज ऑफ नार्थ अमेरिका के पदाधिकारी गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। –ब्राह्मण समाज ऑफ नार्थ अमेरिका के 21वें अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज अपना उद्बोधन-प्रवचन करते हुए।

–योगी जी की योग कक्षा के पश्चात् ब्राह्मण समाज ऑफ नार्थ अमेरिका के पदाधिकारी गण योगी जी को सम्मानित करते हुए।

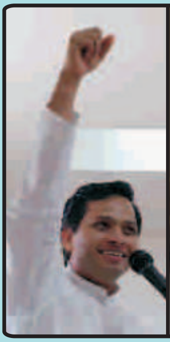

–इंटरनेशनल महावीर अहिंसा मिशन सदर्न कैलिफोर्निया समाज के बीच योग करवाते योगी अरूण जी (लॉस-एंजलस, अमेरिका)।

–पर्युषण पर्व की आराधना के अवसर पर भगवान महावीर के जन्म-वांचन के दिन मां त्रिशला द्वारा देखे गए चौदह स्वप्नों की महिमा बताते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज (लॉस-एंजलस, अमेरिका)।

–ललित पांसर के आवास पर पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों के पश्चात मंगल-मंत्रों से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए वहां का समाज व साथ में हैं ललित भाई (टोरंटो-कनाडा)।

–विदेश यात्रा के पश्चात् पूज्य गुरूदेव का इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट दिल्ली पर स्वागत करने पहुंचे समाज व मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।
–मानव मंदिर में पधारने पर स्वागत-गीतिका प्रस्तुत करते हुए साध्वी समुदाय, बालक एवं बालिकाएं।

–लंदन–ऑन्टोरियो, कनाडा समाज के बीच मंगल–मंत्रों के साथ अपना ओजस्वी प्रवचन करते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज। साथ में हैं शिष्य योगी अरूण।

–पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए गरिमा–किशन व योगी अरूण, लंदन–ऑटोरियो।
–मंदिर परिसर के सम्मुख खडे हैं योगी अरूण व साथ हैं (दायें से) मंदिर के पुजारी पंडित दुर्गेश त्रिपाठी, किरण जी नाहटा, गिरिजाजी व उनकी सहेलिया।

–पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के साथ हैं प्रख्यात हास्य योगी रमेश पाण्डेय व योगी अरूण, लॉस एंजलस (अमेरिका)।

–चंदुभाई रंजना बहन मोरबिया के आवास पर श्रद्धालुओं के बीच प्रवचन करते हुए पूज्यवर (विंडसर कनाडा)।

–लंदन ऑन्टोरियो कनाडा समाज के लोगों को योग करवाते योगी अरूण तिवारी।

-पूज्यगुरूदेव के सान्निध्य में मानव मंदिर गुरूकुल की लाइब्रेरी का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए समाज-सेवी श्री गुलाब चंद्र बरडिया व श्रीमती बिमला बरडिया।
-उद्घाटन की विधि मंत्रपाठ से पूर्ण करते हुए पूज्य गुरूदेव, महासती साध्वी मंजुलाश्री, साध्वी कनकलता जी, साध्वी समताश्री व अन्य।

-गुरूदेव के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए श्रीमती शकुन्तला राजलीवाल, श्रीमती मंजुबाई, श्रीमती निर्मला पुगलिया व श्रीमती प्रियंवदा तिवारी। श्री कमल खुराना ने साध्वी दीपा के देहदान के बारे में सबको जानकारी दी।

-पूज्य गुरूदेव को जन्म दिवस पर हस्तनिर्मित पेंटिग भेंट करते हुए सुशांत जैन।
-बालिकाओं द्वारा हस्तनिर्मित पेंटिग जिसमें से पिंकी जैन की पेंटिग प्रदर्शित करते हुए साध्वी समताश्री।
-श्री बसंत अरूणा मेहता अपने पिता स्व. श्री विजयमल जी मेहता के 100 वर्ष पूरे होने पर प्रति वर्ष प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कार देने की घोषणा की और पहला पुरस्कार गुरूकुल के छात्र गगन जैन को गुरूदेव के समक्ष प्रदान करते हुए।

–राष्ट्रीय स्वयं सेवक दिल्ली प्रांत के संघ चालक श्री आलोक कुमार को मानव मंदिर गुरूकुल की नवनिर्मित डिजिटल लाइब्रेरी की जानकारी देते हुए साध्वी समताश्री।
–साध्वी चांद कुमारी पूज्य गुरूदेव के जन्म-दिवस पर शाल अर्पण करते हुए। साथ में हैं साध्वी वसुमति जी।

–साध्वी कनकलता के नेतृत्व में गुरूकुल की बालिकाएं गुरूदेव के जन्मोत्सव पर गुरू-गाथा का पाठ करते हुए।
–गुरूदेव को समर्पित किरण गुप्ता की भावभीनी कविता पर थिरकती हुई उनकी पोतियां केशवी एवं ईशिका।

–समारोह के पश्चात् पूज्य गुरूदेव से मंगलपाठ सुनते हुए भक्तगण।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus
Since 1994
............The Wellness Retreat

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment

Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया